

० पंथी गीत:-

- यह छ.ग. अंचल में सतनामी पंथ द्वारा गाया जाने वाला विशेष लोकगीत है। [CG PSC (ACF) 2016], [CG Vyapam (FCPR) 2016]
- पंथी नृत्य में नर्तक कलाबाजी करते हैं।
- पंथी नृत्य के अंतिम समय में पिरामिड बनाते हैं।

गीतकार:-

- स्वर्गीय देवदास बंजारे पंथी नृत्य के जनक कहलाते हैं। [CG PSC (Pre) 2005]
- पंथी नृत्य को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याती प्राप्त करने का श्रेय स्वर्गीय देवदास बंजारे जी को जाता है।

वाद्ययन्त्र:- मांदर, झांझ आदि।

० चंदैनी गायन:-

- कलाकार - चिन्तादास
- वाद्ययन्त्र - टिमकी, ढोलक
- चंदैनी गायन लोरिक चंदा के प्रेम प्रसंग पर आधारित है।

[CG PSC (Pre) 2016]

० भरथरी गीत:-

- गायक - सुरुजवाई खाण्डे
- वाद्ययन्त्र - एकतारा व सारंगी

[CG PSC (SSE) 2016], [CG Vyapam (Asst. Audi.) 2016]

० ढोला मारु:-

- यह ढोला और मारु का प्रेम प्रसंग गायन है। किन्तु यह राजस्थानी लोककला है।
- प्रमुख कलाकार - सुरुजवाई खाण्डे

० बांस गीत:-

- यह एक दुख या करुण का गीत है जो छ.ग. में राउत जाति द्वारा गाया जाती है।
- बांस गीत में महाभारत के पात्र कर्ण और मोरध्वज व शीतबसंत का वर्णन होता है।
- इसमें रागी गायक और वादक तीनों होते हैं।
- कलाकार - केजुराम यादव, नकुल यादव

[CG PSC (Pre) 2016]

० भोजली गीत:-

- रक्षा बन्धन के दूसरे दिन भादों माह कृष्ण पक्ष के प्रथम दिन होता है।
- भोजली गीत में गंगा का नाम बार-बार आता है।
- गीत - आ हो देवी गंगा, ओ देवी लहर गंगा।

[CG PSC (Pre) 2015]

० सधौरी गीत:-

- स्वस्थ संतान के मनोकामना हेतु, गर्भधारण के सातवें माह में गाया जाने वाला एक लोक गीत है।

[CG PSC (ADVS) 2013]

० गोपल्ला गीत -

- कल्चुरी वंश से संबंधित है।

० सुआ गीत:-

- सुआ गीत सुआ नृत्य के समय गाया जाती है।
- सुआ नृत्य में केवल महिलाएं भाग लेती हैं।
- सुआ गीत दीपावली के पूर्व शुरू होकर दीपावली के अन्तिम दिवस तक चलता है।
- सुआ गीत शिव और गौरी के प्रतीक होते हैं।
- इस गीत को मुकुटधर पाण्डेय ने छ.ग. का गरबा नृत्य कहा है।

[CG PSC (Mains) 2011]

❖ **रीलो गीत:-**

- मुडिया जनजाति के वैवाहिक गीतों को रीलो कहा जाता है।
- यह मूलतः माडिया-मुरिया गीत है जो स्त्री तथा पुरुष द्वारा बारी-बारी से गाया जाता है।

❖ **चइत परब गीत:-**

- यह गीत बस्तर में स्त्री तथा पुरुषों के बीच प्रतिद्वंद्विता का गीत है।
- यह चैत्र माह की रातों में गाया जाता है।

❖ **तारा गीत:-** • तारा गीत नवयुवतियों द्वारा नई फसल आने पर गाया जाता है।

❖ **जंवारा गीत:-** चैत्र नवरात्री में जंवारा गीत गाया जाता है और जंवारा निकाला जाता है।

❖ **सेवा गीत:-** नवरात्री के समय देवी पूजा पर गाया जाता है।

❖ **भड़ौनी गीत:-** विवाह के समय दुल्हे के भाईयों द्वारा दुल्हे के सालियों के उपहास हेतु गाया जाता है। [CGPSC (Pre) 2015]

❖ **फाग गीत:-** फाल्गुन माह में होली के समय गाया जाता है।

❖ **सोहर गीत:-** बच्चे के जन्म के समय गाया जाता है।

[CGPSC (Mains) -2011]

❖ **छेरता गीत:-**

- नई फसल आने की खुशियों में छेरछेरा उत्सव बस्तर में प्रतिवर्ष पीप की पूर्णिमा को मनाया जाता है।
- इसे छेर-छेरा भी कहा जाता है।
- बालक-बालिकाओं की टोलियों नगरों तथा गाँवों में दो दिनों तक प्रसन्नपूर्वक हर्षोल्लास पूर्वक गाकर दान मांगा जाता है।
- छेरता गीत नवयुवकों द्वारा मुख्यतः मनाया जाता है।

❖ **लेंजा गीत:-**

- इसके गाने के लिए कोई विशेष विधि निर्धारित नहीं होती है इसे कोई भी समय गाया जा सकता है।
- यह एक विशुद्ध हल्दी गीत है।
- स्त्रियों और पुरुषों के द्वारा साथ-साथ तथा पृथक तौर पर भी गाया जा सकता है।

❖ **छ.ग. विवाह गीत :-**

चूलमाटी	:- विवाह के आरम्भ समय में माटी खुदाई (तौला माटी कोड़े ल नई आवय भीत धीरे-धीरे तोर कनिहाँ ला ढील धीरे-धीरे)
तेलचढ़ी	:- जब वर एवं कन्या को तेल हल्दी लगाया जाता है।
मायन गीत	:- मायन के समय गाया जाने वाला गीत।
बारात गीत	:- बारात के समय गाया जाने वाला गीत।
परघौनी गीत	:- बारात के स्वागत के समय गाया जाता है।
भड़ौनी गीत	:- खाने के समय वर पक्ष द्वारा हास-परिहास हेतु गाया जाता है।
माँवर	:- फेरा लेते समय गाया जाने वाला गीत।
टिकावन	:- नव दम्पती को उपहार दिया जाता है।
बिदाई	:- पठौनी गीत गाई जाती है।

लोक नृत्य

1. सुआ नृत्य/गौरा-गौरी नृत्य :-

- देवार जनजाति की महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- यह नृत्य दीपावली के समय किया जाता है।
- इसमें केवल महिलाएं भाग लेती हैं। • इसे गौरा नृत्य भी कहते हैं।
- इसमें मिट्टी के तोते बनाकर चारों ओर थापड़ी बजाकर नृत्य करते हैं।
- दोनों तोता शिव पार्वती का प्रतीकात्मक स्वरूप माना जाता है।

2. पंथी नृत्य:-

- छ.ग. अंचल में सतनाम पंथ के लोगों द्वारा सामान्य अवसर पर किया जाता है।
- प्रमुख नाचाकार :- स्व. देवदास बंजारे।
- प्रमुख वाद्ययंत्र :- मांदर व झांझ।

3. राउत नाचा:-

- राउत नाचा छ.ग. के विलासपुर जिले में होता है।
- राउत नाचा कार्तिक माह में देवउठनी के दिन विलासपुर के देवकी नंदन सभागृह में आयोजन होता है।
- विलासपुर में राउत नाचा 1978 में प्रारंभ हुआ था।
- वर्तमान (2016) में 38 वें नंबर का राउत नाचा महोत्सव का आयोजन हुआ है।
- राउत नाचा भगवान कृष्ण के पूजा के प्रतीक के रूप में किया जाता है।
- इसमें केवल पुरुष ही भाग लेते हैं जो कि महिलाओं का भी रूप धारण करते हैं।
- मातर त्यौहार राउत लोग मनाते हैं।
- राउत नाचा में दोहे गाये जाते हैं।
- यह नृत्य कार्तिक प्रबोधनी एकादशी से प्रारंभ होकर यह नृत्य एक पखवाड़े तक चलती है।
- राउत नाचा शौर्य कलात्मक प्रदर्शन है।

प्रमुख वाद्ययंत्र :- गडवा बाजा ।

राउत नाचा के दोहे- जइसन तुम लिहो दिही, तइसन देबो असीस।
अन्नघन भंडार भरे, तुम जीयो लाया बरीस।।

4. अटारी नृत्य:-

- यह बघेलखण्ड के भूमिया वैगाओं का नृत्य है।
- इसके एक पुरुष के कंधे पर दो आदमी आरुढ़ होते हैं।
- वादक पार्श्व में रहते हैं और एक आदमी ताली बजाते हुए भीतर-बाहर आता जाता रहता है।

5. सैला नृत्य:-

- सैला नृत्य मुख्यतः पुरुषों द्वारा किया जाता है, इसमें नर्तक हाथों में डंडा लेकर नृत्य करते हैं।
- सैला नृत्य में दोहे भी बोले जाते हैं, इसे डंडा नाच भी कहा जाता है।

6. करमा नृत्य:-

- करमा नृत्य संभवतः अंचल का सबसे पुराना नृत्य है।
- करमा नृत्य कर्म या करमसेनी को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है।
- गोड़, वैगा, उरांव, बिंझवार, आदि जनजातियों में करमा नृत्य का व्यापक प्रचलन है।
- करमा नृत्य प्रायः विजय दशमी से आरंभ होकर अगली वर्षा ऋतु के आरंभ तक चलता है।

[CGPSC (Pre) 2016]

[CGPSC (ACF) 2016]

लोकनाट्य

लोकनाट्य में नृत्य गान व अभिनय सभी का समावेश होता है। जो कि सामान्य समारोह के रूप में तो कुछ स्थानीय कुरुतियों का प्रकाश में लाने के उद्देश्य से एक नाट्य मंच के माध्यम से प्रस्तुत किये जाते हैं। छ.ग. के प्रमुख लोकनाट्य का विवरण इस प्रकार है-

1. नाचा

- छ.ग. का सर्वाधिक प्रचलित लोकनाट्य, जो कि ग्रामीण अंचल में सर्व व्याप्त है।
- मराठा काल में यह प्रारंभ हुआ जो कि नाचा कहलाता था।
- नाचा में तमाशा (मराठी) का प्रभाव दिखता है।
- यह मूलतः पुरुषों के द्वारा किया जाता है। परन्तु अब महिलाएं भी नाट्याभिनय करती हैं।
- नर्तकों की स्थानीय वेशभूषा होती है। तथा गांवों के किसी सार्वजनिक स्थल पर मंचन होता है।
- इसमें जोक्कड़ एवं परी की अहम भूमिका होती है।

2. रहस

- रहस छ.ग. राज्य का सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक है।
- पौराणिक चरित्रों की मानवआकार प्रतिमाएं बनाते हैं।
- यह राधा और कृष्ण की मनोहारि रामलीला की कथा का छ.ग. रूपांतरण है।
- यह बिलासपुर संभाग में सर्वाधिक प्रचलित है।
- रहस के रंगमंच को वेड़ा कहा जाता है।
- छ.ग. में बायू रेवाराम रचित रहस की पाण्डुलिपिया प्रचलित है।
- इसमें विदुषक की भूमिका एक हास्य कलाकार के रूप में होती है।
- यह लोक नाट्य उत्तरप्रदेश के रासलीला से अधिक प्रभावित है।

[CG Vyapam (LOI) 2015]
[CG PSC (Horti.Cl.) 2015]

[CG Vyapam (AMIN) 2017]

3. गम्मत

- यह हास्य व्यंग्य की शैली में सामाजिक कुरीतियों व विषमता पर प्रहार करता है।
- इसमें विदुषक (जोक्कड़) की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।
- नर्तक की भूमिका भी पुरुष ही करते हैं।
- इसके दो रूप प्रचलित हैं पहली - खड़े साज एवं दूसरी - बैठे साज।

4. माओपाटा

- यह मुड़िया जनजाति की शिकार पर आधारित नाट्य है।
- जिसमें जंगली भैंसे या सांभर के शिकार का मंचन किया जाता है।

[CG PSC (Engg.Set-2) -2015]

5. भतरानाट

- यह बस्तर के भतरा जनजाति द्वारा किया जाता है।
- भतरा नाट में केवल पुरुष ही भाग लेते हैं।
- इस पर उड़ीसा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। अतः इसे उड़िया नाट्य भी कहते हैं।
- भतरानाट कथानक युद्ध प्रधान होता है। इसकी कथा वस्तु का स्रोत प्रायः पौराणिक प्रसंग होते हैं।

6. दहिकांदो

- आयोजन - कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर

7. खम्ब स्वांग

- यह कोरकू जनजाति में प्रचलित लोकनाट्य है।
- आयोजन - क्वार नवरात्रि से देव प्रबोधिनी एकादशी तक
- गांव के मध्य मेघनाथ खम्ब की स्थापना कर इसके आस पास खम्ब स्वांग का मंचन किया जाता है।

छ.ग. के त्यौहार व पर्व

1. चैत्र माह	21 या 22 मार्च पूर्णिमा	शुक्ल पक्ष नवमी - रामनवमी । डभरा मेला लगता है । उराव जनजाति के लोग साल वृक्ष के फूल आने पर सरना देवी की पूजा करते हैं ।
2. वैशाख	21 अप्रैल	शुक्ल पक्ष तृतीया - अक्षय/अक्ती तृतीया किसानों द्वारा बीज बोआई का शुभारंभ । पुतरा - पुतरी विवाह ।
3. ज्येष्ठ	22 मई	
4. आषाढ	22 जून	शुक्ल पक्ष द्वितीया - रथ यात्रा गोंचा पर्व (जगदलपुर)
5. सावन	23 जुलाई	अमावस्या - हरेली पूजा । शुक्ल पक्ष पंचमी - नागपंचमी । पूर्णिमा - रक्षाबंधन ।
6. माद/मादो	22 अगस्त	कृष्ण पक्ष प्रथमा - भोजली विसर्जन । कृष्ण पक्ष षष्ठी - हलषष्ठी (माँ द्वारा पुत्र की आयु के लिए) अमावस्या - पोला (बैल की पूजा) शुक्ल पक्ष चतुर्थी - गणेश चतुर्थी पूर्णिमा - नावाखाई
7. कुवार/अश्विन	23 सितम्बर	कृष्ण पक्ष - पितर पक्ष शुक्ल पक्ष 1-9 तक - नवरात्री शुक्ल पक्ष दशमी - विजय दशमी पूर्णिमा - शरद पूर्णिमा
8. कार्तिक	23 अक्टूबर	कृष्ण पक्ष तेरस - धनतेरस कृष्ण पक्ष चौदस - नरक चौदस अमावस्या - दीपावली शुक्ल पक्ष प्रथमा - गोवर्धन पूजा शुक्ल पक्ष द्वितीया - बस्तर अंचल में दियाशी त्योहार शुक्ल पक्ष एकादशी - भाई दुज कार्तिक पूर्णिमा - देवउठनी एकादशी (राउत नाचा) आंवला पूजा
9. अघ्यन	22 नवम्बर	प्रत्येक गुरुवार - लक्ष्मी पूजा
10. पौष	22 दिसम्बर	शुक्ल षष्ठी - मकर सक्रांती पूर्णिमा - छेर-छेरा
11. माघ	21 जनवरी	शुक्ल पंचमी - बसंती पंचमी
12. फाल्गुन	20 फरवरी	कृष्ण पक्ष चतुरदशी - महाशिव रात्रि पूर्णिमा - होलिका दहन

हिन्दी पंचांग

- कृष्ण पक्ष - अमावस्या, शुक्ल पक्ष - पूर्णिमा।
- यह शक संवत् 78 ई. सप्ताह के सात दिन ग्रेगरियन कैलेंडर के 365 दिन पर आधारित होते हैं।
- हिन्दी कैलेंडर का प्रथम मास 'चैत्र' तथा अंतिम मास 'फाल्गुन' होता है।

विस्तृत वर्णन

1. हरेली

- आयोजन - श्रावण अमावस्या
- छ.ग. का प्रथम पर्व जिसे गेड़ी पर्व भी कहा जाता है।
- इस पर्व के दौरान किसान लौह उपकरण की पूजा करते हैं।
- छ.ग. में हरेली त्यौहार मुख्य रूप से किसानों द्वारा मनाया जाता है।
- हरेली त्यौहार में घर के बाहर गोबर से प्रेत बनाया जाता है।

[CG Vyapam (E.Chemist) 2016]

[CG Vyapam (CMO Paper-2) 2016]
[CG PSC (AD.Agri.Fish) 2013]

2. अक्षय तृतीया (अक्ती)

- आयोजन - बैसाख शुक्लपक्ष तृतीया
- इस पर्व के दौरान पुतरा पुतरी का विवाह करते हैं।

3. हलषष्ठी

- आयोजन - भाद्रपद कृष्णपक्ष षष्ठी
- इस पर्व में मातायें अपने पुत्र की लम्बी आयु के लिए व्रत रखती हैं।

4. पोला

- आयोजन - भाद्रपद अमावस्या
- इस पर्व में मिट्टी की बेलों की पूजा की जाती है।

[CG PSC (AD.Agri.)-2013]

5. हरित तालिका (तीजा)

- आयोजन - भाद्रपद शुक्लपक्ष तृतीय
- इस पर्व में विवाहित महिलायें अपने मायके जाकर पति के लिए व्रत रखती हैं।

[CG PSC (FI) 2008]

6. देवउठनी एकादशी

- आयोजन - कार्तिक शुक्लपक्ष एकादशी
- इस पर्व में तुलसी विवाह तथा गन्ने की पूजा होती है।

7. छेरछरा

- आयोजन - पौष पूर्णिमा
- इस पर्व के दौरान बच्चे घर-घर जाकर धान माँगते हैं।
- गीत - छेरछरा कोठी के धान ला हेरते हेरा

[CG Vyapam (TDHS) 2016]

लोकगीत का वर्गीकरण

छ.ग. विशिष्ट अध्ययन (हरिराम पटेल)

- | | |
|---------------------|---|
| 1. धर्म व पूजा गीत | :- भोजलीगीत, जवांरा गीत, मातासेवा गीत, नागपंचमी गीत, गौरी गौरी गीत। |
| 2. ऋतुओं पर आधारित | :- सवनाही गीत, फाग गीत |
| 3. उत्सव संबंधी गीत | :- राऊत नाचा के दोहे, सुआ गीता, छेर-छेरा गीत |
| 4. संस्कार गीत | :- विवाह गीत, सोहर गीत, पठौनी गीत |
| 5. मनोरंजन गीत | :- कर्मा गीत, बास गीत, डंडा गीत, ददरिया गीत |

जनजातीय पर्व

1. बस्तर का दशहरा

- यह छ.ग. का विश्व प्रसिद्ध सांस्कृतिक पर्व है जो प्रत्येक वर्ष विजयादशमी के दौरान बस्तर में मनाया जाता है। [CGPSC (ADHS) 2014]
- बस्तर में दशहरे की शुरुआत काकतीय वंश के राजा पुरुषोत्तम देव के द्वारा की गई थी इस पर्व की कुल अवधि 75 दिन होती है। इस दौरान अनेक रस्मों का आयोजन होता है:-
1. काछन-गुड़ी - बस्तर में दशहरे की शुरुआत काछन गुड़ी रस्म से होती है। सामान्यतः 9 वर्ष की कुंवारी कन्या को देवी रूप मानकर उसने इस पर्व के निर्विघ्न सम्पन्न होने की प्रार्थना करते हैं। एवं काछन देवी की पूजा होती है। [CG Vyapam (FCPR) 2016]
 2. जोगी बिठाना - एक स्थान में जोगी के रूप में व्यक्ति बिना अन्न जल ग्रहण किये मां दंतेश्वरी की उपासना करता है।
 3. मावली परघाव - मां दंतेश्वरी के प्रतीक स्वरूप मावली भाता की प्रतिमा को रथ में बैठाने से पूर्व स्थानीय निवासी यथास्थान से बाजे गाजे के साथ उठाकर रथ तक लाते हैं। [CG PSC (SSE) 2016]
 4. गोंचा (रथयात्रा) - इसमें मां दंतेश्वरी के प्रतीक स्वरूप मूर्ति को सोलह पहियों के बड़े रथ में बैठाकर दो बड़े-बड़े रस्सों की सहायता से स्थानीय आदिवासियों के द्वारा श्रद्धा पूर्वक खींचा जाता है।
 5. मुरिया दरबार - यह सबसे अंतिम रस्म होती है जिसमें बस्तर के राजा के द्वारा एक दरबार का आयोजन कर दशहरा के कुशलता पूर्वक समापन होने के घोषणा की जाती है। और निवासियों को बधाई संदेश देते हैं।

2. धनकुल पर्व

इसमें पूजा के दौरान तीन अनिर्वाय वस्तुएं घड़ा, सूपा, धनुष को शामिल किया जाता है। क्योंकि इसे इस पर्व की आध्यात्मिक प्रतीक माने जाते हैं।

3. दियारी पर्व

बस्तर में दीपावली के दूसरे दिन मनाया जाता है।

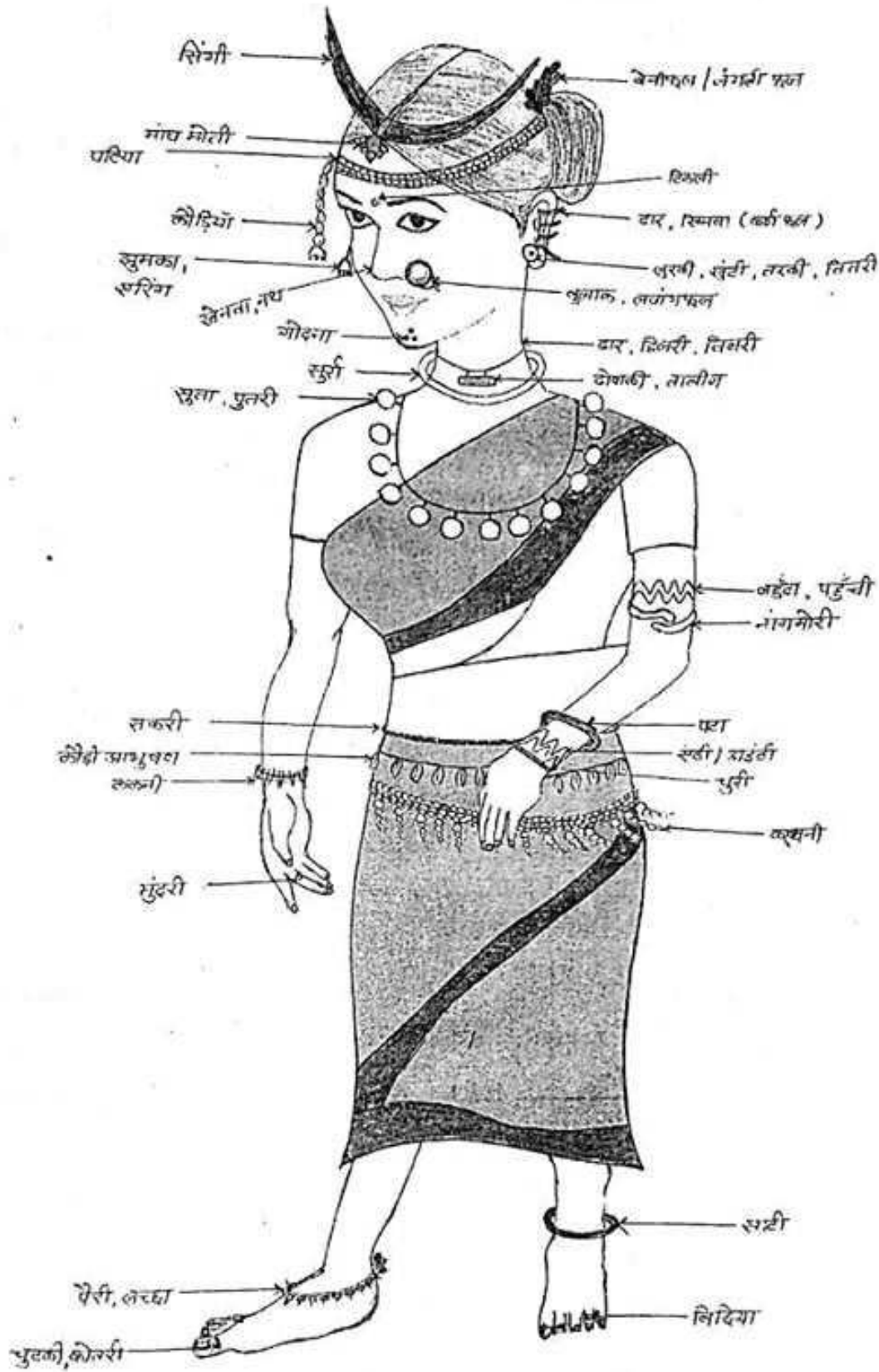
त्यौहार	जनजाति	विशेष
1. नवाखानी	गोड़	नई फसल आने पर आयोजन
2. सरहूल	उरांव	साल वृद्ध में फुल लगने पर
3. बीज बोहनी	कोरवा	कृषि के दौरान आयोजित
4. कोरा	कोरवा	कृषि के दौरान आयोजित
5. घेरसा	कोरवा	कृषि के दौरान आयोजित
6. आमाखाई	परजा धुरवा	आम पकने के समय आयोजित
7. धनकुल	भतरा, हल्वा	तीज के समय आयोजन(भाद्रपद)











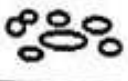


छ.ग. के वाद्ययंत्र

1. दफड़ा - यह लकड़ी के गोलाकार व्यास में घमड़े से बनाया जाता है। जिसे बादक द्वारा कंधे पर लटकाकर बजाया जाता है।
2. नगाड़ा - होली के अवसर पर फाग गीतों के गायन में प्रयुक्त वाद्ययंत्र
3. झांझ - यह मंजीरा का एक रूप है।
4. गुंडुम - इस वाद्ययंत्र में बारहसिंग का सीमा लगा होता है। इसलिए इसे सींग बाजा भी कहते हैं। यह गड़वा बाजा साज का प्रमुख वाद्ययंत्र है।
5. तारा - प्रदेश के मुस्लिम समाज में प्रचलित प्रसिद्ध वाद्ययंत्र
6. अलगोजा - बांस की बनी बांसुरी को अलगोजा कहते हैं।
7. मोहरी - छ.ग. में शहनाई का प्रचलित रूप
8. खड़ताल - पंडवानी में प्रयोग होने वाला प्रमुख वाद्ययंत्र
9. चांग - यह डफली का एक रूप है।

छ.ग. के आभूषण

पैर	बिच्छवा, पेंरी/पाइल/साटी, लच्छा, तोड़ा
कमर	करघन (चौंदी)
अंगुली	मुदरी
कलाई	ऐठी, घुरी, कंकनी, पटा,
बॉह	बाजूबंद, बहूटा, पहुंची, नागमोरी, बनुरिया, हरईया [CG PSC (ACF)2016]
गला	सुतिया/सुता/सुररा, दुलरी, तिलरी, हंसली, पुतरी, डोलकी, ताबीज, मोहर, फलदार, कंठा
कान	खिनवा, तरकी, लरकी, तितरी, खूटी, लवंगफुल, खोटिला [CG PSC (SSE)2016],[CG Vyapam (FCPR)2016]
नाक	बुलाक, बेसर, लवंग, नथ, नथनी, फुल्ली
माथा	टिकली, विदियां
सिर	मांगमोती, पटिया, वेनी, ककई, कंघी



क्र.	व्यंजन का नाम	चित्र	प्रयुक्त कच्चा पदार्थ	स्वाद	उत्सव/पर्व
1.	ठेठरी		चना बेसन	नमकीन	तीजा पोला के समय
2.	खुरमी		गेहूँ+चावल+आटा	मीठा व्यंजन	तीजा पोला के समय
3.	देहरीरी (देशी रसगुल्ला)		दरदरे चावल	मीठा व्यंजन	पितृ पक्ष के दिन
4.	गुलगुल्ला		गेहूँ आटा	मीठा व्यंजन	अतिथी संस्कार के समय
5.	भजिया		चना बेसन	नमकीन व्यंजन	अतिथी संस्कार के समय
6.	घीला		चावल आटा	नमकीन व्यंजन	हरतालिका पर्व के समय
7.	चीरोला		चावल आटा	नमकीन व्यंजन	सामान्य अवसर पर
8.	सोहारी		गेहूँ आटा	नमकीन व्यंजन	तेल में छ़ादकर बनाया गया
9.	अईरसा		चावल आटा+गूड	मीठा व्यंजन	दीपावली होली के समय
10.	पपची		चावल+गेहूँ आटा	मीठा व्यंजन	शादी के अवसर पर
11.	फरा		गन्ना रस एवं चावल आटा	मीठा	सामान्य अवसर पर
12.	बबरा		गेहूँ से		मातृ नवमी को बनाया जाता
13.	तसमई		दूध, चावल, शक्कर आदि पदार्थ	मीठा व्यंजन	सामान्य अवसर पर
14.	बरा		उड़द व मूँग दाल से	नमकीन	सामान्य अवसर पर
15.	लाटा		इमली, नमक, मिर्ची, धनिया आदि	नमकीन	सामान्य अवसर पर देशी लालीपाप

छ.ग. के मेले

1. माघ पूर्णिमा से प्रारंभ होकर	<p>महाशिवरात्रि तक</p> <ul style="list-style-type: none"> • दामाखेड़ा एवं कुदुरमाल मेला (माघ पूर्णिमा – कवीरपंथी) • राजिम का मेला • शिवरीनारायण का मेला • सिरपुर का मेला • रतनपुर का मेला • मल्हार का मेला
2. रामनवमी का मेला	<ul style="list-style-type: none"> • डभरा का मेला (जांजगीर-चांपा) • डोंगरगढ़ का मेला (राजनांदगाँव) • खल्लारी का मेला (महासमुंद) • भोरगदेव का मेला (कवीरधाम) • रतनपुर का मेला (विलासपुर) • चंद्रपुर का मेला (जांजगीर-चांपा)
3. पौष पूर्णिमा का मेला	तुरतुरिया मेला
4. कार्तिक पूर्णिमा का मेला	महादेव घाट मेला (खारून नदी के तट पर)
5. बसंत पंचमी/माघ पंचमी	<ul style="list-style-type: none"> • गिरौधपुरी का मेला • कुटीघाट का मेला
6. मकर सक्रांती	<ul style="list-style-type: none"> • लखनघाट हसदेव नदी (चांपा) • शिवरीनारायण का मेला
7. कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मेला	<ul style="list-style-type: none"> • रायगढ़
8. मडाई मेला	<ul style="list-style-type: none"> • नारायणपुर • फरसगाँव (कोण्डागाँव) <div style="text-align: right;">[CG PSC (PRE.)2016]</div>
9. नाग पंचमी	दलहा पहाड़ का मेला (जांजगीर चांपा)

खेल

❖ अर्जुन पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ी

- हनुमान सिंह - बॉस्केटबाल खिलाड़ी (अर्जुन अवार्ड प्राप्त करने वाले छ.ग. के प्रथम खिलाड़ी 1975)
- आर.बेस्टियन - हॉकी खिलाड़ी
- राजेन्द्र प्रसाद - मुक्केबाज (1992)
- देवेन्द्र सिंह - पैरा ओलंपिक (2004) - विलासपुर
- सबाअंजुम - हॉकी खिलाड़ी (2013) दुर्ग

❖ छ.ग. से ओलम्पिक में :-

- लेजली क्लाडियस - 1948, 1952, 1956 एवं 1960 ओलम्पिक में (हॉकी खिलाड़ी)
- आर. बेस्टियन - 1960 (हॉकी खिलाड़ी)
- विन्सेंट लकड़ा - 1948, 1952, 1956, एवं 1960 (हॉकी खिलाड़ी)
- हनुमान सिंह - 1980 मास्को ओलम्पिक (बी.एस.पी. दुर्ग) बॉस्केटबॉल
- राजेन्द्र प्रसाद - 1980 मास्को ओलम्पिक (बी.एस.पी. दुर्ग) मुक्केबाज

❖ छ.ग. के खेल सम्मान

1. गुंडाधुर सम्मान -

- यह सम्मान उत्कृष्ट खेल प्रदर्शन पर दिया जाता है।

- पुरस्कार राशि दो लाख रुपये।

- प्रथम पुरस्कार 2001 में आशीष अरोरा (बैलीबॉल) को प्रदान किया गया, वर्तमान विवरण शासन के पुरस्कार में दिया है।

2. शहीद राजीव गांधी पुरस्कार -

- यह राज्य के परिष्ठ (सीनियर) खिलाड़ियों को प्रदान किया जाता है।

- पुरस्कार राशि 2.25 लाख रुपये है।

- प्रथम पुरस्कार अमिता दलई व तेजासिंह साहू को दिया गया।

3. शहीद कौशल यादव पुरस्कार :-

- यह राज्य के कनिष्ठ (जूनियर) खिलाड़ियों को प्रदान किया जाता है।

- पुरस्कार राशि 1 लाख रुपये है।

- प्रथम पुरस्कार सबनम बानो व दुर्गा प्रसाद जंधेल को दिया गया।

4. हनुमान सिंह सम्मान -

- यह सम्मान खेल प्रशिक्षकों को प्रदान किया जाता है।

- प्रथम पुरस्कार संजय शर्मा को प्रदान किया गया।

5. शहीद विनोद चौबे सम्मान -

- खेल के क्षेत्र में लाईफ टाईम अचीवमेंट के तहत दिया जाता है।

6. प्रवीर चंद भंजदेव सम्मान -

- यह सम्मान तीरंदाजी के क्षेत्र में प्रदान किया जाता है।

- प्रथम पुरस्कार अरविंद सोनी व टेकलाल कुर्रे को प्रदान किया गया।

० छत्तीसगढ़ की खेल प्रतियोगिताएं

- महंत सर्वश्वरदास स्मृति कप - हॉकी
- गोंडवाना कप - लॉन टेनिस से संबंधित
- सुब्रतो मुखर्जी कप - फुटबाल
- बिसाहू दास महंत कप - फुटबाल

० पर्व आधारित खेल

- हरेली - गेड़ी व नारियल फेक प्रतियोगिताएं
- नागपंचमी - कुश्ती
- पोरा - बईला दौड़
- अक्षय तृतीया (अक्ती) - पुतरा पुतरी

० छ.ग. के खेल स्टेडियम

- वीरनारायण सिंह अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम - परसदा (नया रायपुर) निर्माण - 2008 में नागार्जुन कंस्ट्रक्शन कंपनी (हैदराबाद)
- बलबीर सिंह जुनेजा इंडोर स्टेडियम - रायपुर
- पहला ब्लूटर्फ हॉकी स्टेडियम - रायपुर
- पहला एस्ट्रोर्टर्फ हॉकी स्टेडियम - राजनांदगांव
- दिग्विजय स्टेडियम - राजनांदगांव
- जयंती स्टेडियम - भिलाई

[CGPSC (PRE.)2016]

० छ.ग. के परम्परागत खेल स्पर्धा:-

1. फुगड़ी 2. कबड्डी 3. कुश्ती 4. खोखो 5. विल्लस 6. राजा-रानी 7. गुल्ली डंडा 8. गेड़ी दौड़ 9. डण्डा-पचरंगा 10. भंवरा
11. पिटुला 12. कुर्सी दौड़ 13. गैलगाड़ी दौड़ 14. सुई धागा दौड़ 15. जोड़ुल 16. चुड़ी बिनउल 17. पखरातुन 18. पानातरी
19. पौसम - पौ 20. अटकन - मटकन 21. तुतरु 22. घर घुंघिया 23. आंधी चपार्ट 24. गोटा 25. उलानवाटी 26. खुडुबा 27. भोटकुल

खेल संबंधी महत्वपूर्ण तथ्य

- छ.ग. की खेल राजधानी - भिलाई
- छ.ग. में गोंडी में खेल को कर्सना कहा जाता है।
- राज्य में खेल अकादमी - रायपुर तथा कोंडागांव में स्थापित किया जायेगा
- राज्य की प्रथम फुटबॉल अकादमी - सरगुजा में स्थापित किया जायेगा।
- छ.ग. राज्य ओलंपिक संघ का गठन 15 जुलाई 2001 को किया गया।
- राज्य का प्रथम खेल विश्वविद्यालय राजनांदगांव में स्थापित किया जायेगा।

छ.ग. के उत्कृष्ट खिलाड़ी

1. हॉकी 1. आर.वेस्टियन - (राजनांदगांव) 2. लेजली क्लायडियस (बिलासपुर) 3. विसेंट लकड़ा - (बिलासपुर) 4. संबा अंजुम - (दुर्ग) (2003 में अर्जुन, 2015 पद्मश्री एवं वर्तमान में डी.एस.पी.) 5. नीता डुमरे (भिलाई)	9. हैण्डबाल :- 1. विजय रेड्डी 2. सवना कुरैशी 3. फुनाल शर्मा 4. प्रभा नायर
2. पावर लिफ्टिंग:- 1. तन्द्रा राय चौधरी	10. नेटबाल :- 1. कुप्रीति बंधोर 2. कु. सरिता यादव 3. नेहा बनाज
3. वेट लिफ्टिंग:- 1. रूस्तम सारंग 2. अजय दीप सारंग 3. बुद्धराम सारंग	11. बार्क्सिंग :- 1. राजेन्द्र प्रसाद 2. विरेन्द्र साहू 3. करण सोनकर
4. कुश्ती :- 1. अवधेश यादव	12. कराटे :- 1. अम्वर सिंह भारद्वाज (गुण्डाधुर पुरस्कार -2014)
5. फूटबॉल :- 1. ह्यूबर्ट क्लायडियसियम 2. लेजली क्लायडियसियस	13. शतरंज :- 1. किरण अग्रवाल 2. मनोज वर्मा 3. सुधाकर बाबू 4. संतोष कौशिक
6. क्रिकेट :- 1. राजेश चौहान 2. संतोष साहू 3. आर.डी. आउटी	14. बैटमिंटन :- 1. संजय मिश्रा 2. उपमा सिंह 3. संयम शुक्ला (2014 में सीनियर पुरुष युगल खेल)
7. बस्केटबाल :- 1. राजेश पटेल 2. नवनीत कौर 3. पूनम चतुर्वेदी (एशिया का सबसे लंबा खिलाड़ी)	15. टेबल टेनिस :- 1. समीर सरकार
8. बालीवाल :- 1. आशीष अरोरा 2. बसीर अहमद खॉं 3. विनोदराय	16. निशानेबाजी :- 1. अमर दीप सिंह राय 2. सानिया शेख 17. जिमनास्टिक :- अखिलेश तोमर 18. जुडो :- रीना साहू 19. केयकिंग कैनोइंग (दौड़) - 1. ममता प्रधान 2. देव कुमारी

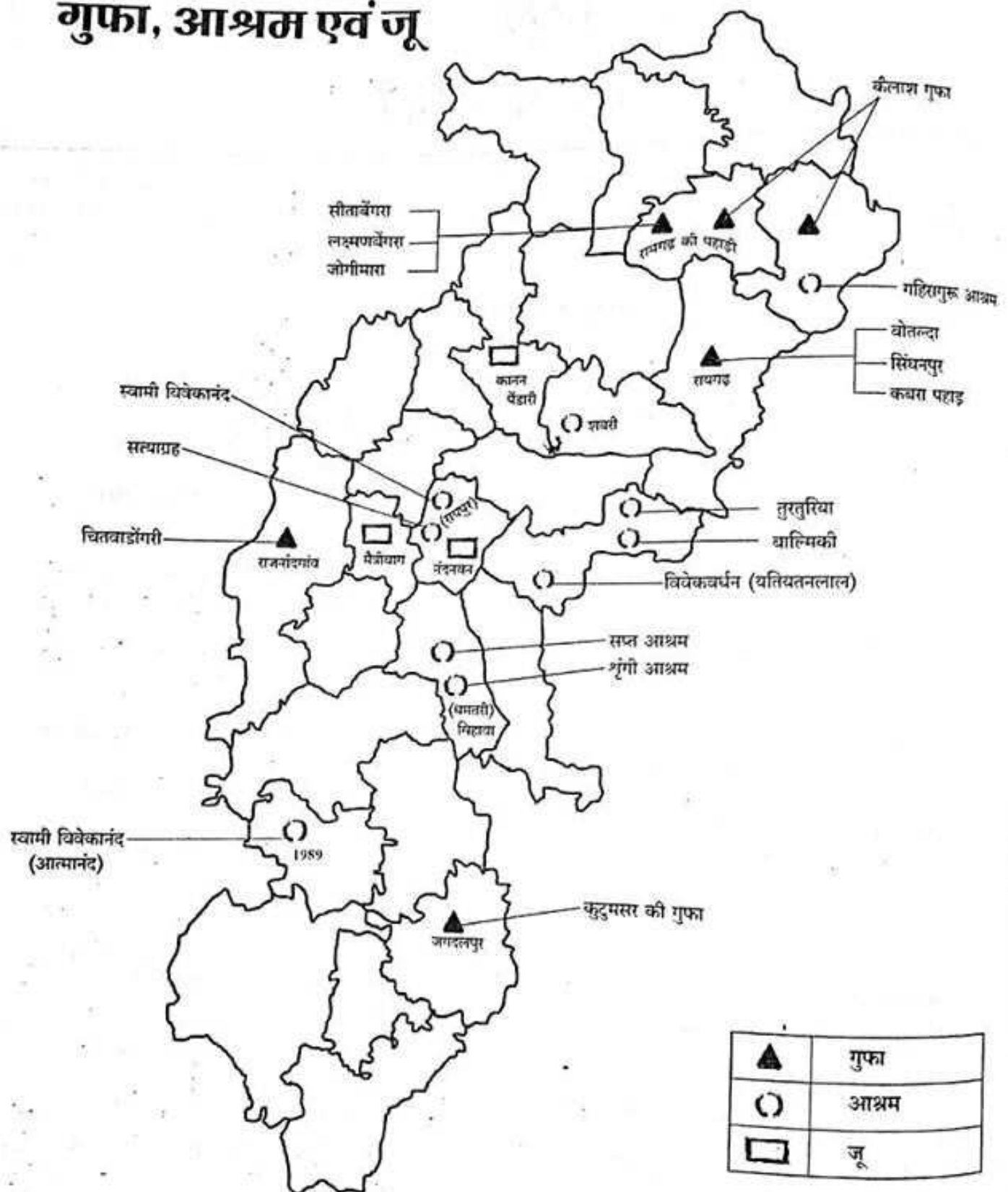
27

पर्यटन स्थल

छ.ग एक नवीन राज्य है, किंतु इसके ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि से अतीव संपन्न समृद्ध राज्य है, जिसमें ऐतिहासिक, धार्मिक, प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अनुपम पर्यटन स्थल उपस्थित है। जो कि छ.ग को राष्ट्रीय स्तर के अलावा अंतराष्ट्रीय स्तर पर एक विशेष छाप छोड़ता है। इन पर्यटन स्थल का विवरण निम्नवत् है।

छ.ग. के धार्मिक पर्यटन स्थल		
धर्म	स्थान	
वैष्णव-धर्म	1. शिवरीनारायण (जांजगीर-चांपा) 2. खल्लारी (महासमुंद) 3. सिरपुर (महासमुंद) 4. राजिम	शिवरी माता नर नारायण मंदिर नारायण मंदिर लक्ष्मण मंदिर (विष्णु भगवान मंदिर) राजीव लोचन मंदिर (विष्णु मंदिर)
शैव-धर्म	1. पाली (कोरवा) 2. पौष्पपुर (जांजगीर-चांपा) 3. तालागांव (बिलासपुर) 4. चंपारण्य (गरियाबंद)	शिव मंदिर (वाणवंशीय विक्रमादित्य द्वारा निर्मित) महादेव मंदिर (शिव मंदिर) रुद्र शिव प्रतिमा, देवराणी जेठानी मंदिर [ICG VYAPAM (I.OI)2015] चंपकेश्वर महादेव मंदिर, बल्लभाचार्य (शुद्धद्वैत के प्रवर्तक से)
ईसाई धर्म	1. मदकूदीप (मुंगेली) 2. कुनकुरी (जशपुर)	ईसाई धर्म का प्रसिद्ध मेला (मनियारी व शिवनाथ के संगम पर) एशिया का दूसरा बड़ा कैथोलिक चर्च
कबीरपंथ	1. कुदुरमाल (जांजगीर-चांपा) 2. दामाखेड़ा (बलौदाबाजार)	श्री धर्मदास के पुत्र मुक्तमणि साहब ने यह शाखा स्थापित की थी कबीरपंथियों का तीर्थस्थल नोट- छ.ग. में कबीरपंथ के संस्थापक-चूड़ामणी साहब हैं।
बौद्ध-धर्म	1. सिरपुर	बौद्ध एवं स्वस्तिक विहार
जैन-धर्म	1. गुंजी (दमाउदरहा)(जांजगीर-चांपा) 2. नगपुरा (दुर्ग) 3. आरंग (रायपुर)	ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर पार्ष्वनाथ मंदिर (23वां तीर्थंकर) भाण्डलदेव मंदिर
मुस्लिम धर्म	1. लुथराशरीफ (बिलासपुर) 2. तफिया (अम्बिकापुर)	मजार (सैय्यदबाबा इंसानअली) मजार
देवी माँ	1. रतनपुर (बिलासपुर) 2. डोंगरगढ़ (राजनांदगांव) 3. दंतोवाड़ा 4. चन्द्रपुर (जांजगीर-चांपा)	महामायादेवी मंदिर ब्रम्हलेश्वरी देवी मंदिर दंतेश्वरी मंदिर चंद्रहासनी व नाथलदाई मंदिर

गुफा, आश्रम एवं जू



- नदी वाला अध्याय में वर्णित

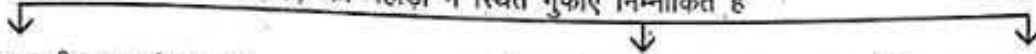
2. जल प्रपात

3. छत्तीसगढ़ की गुफाएँ

(A) रामगढ़ की पहाड़ी (सरगुजा)

- कर्नल आउस्ले (वर्ष 1848 में खोज किया गया)
- यह भी माना जाता है महाकवि कालीदास द्वारा इसी पहाड़ी में अपने श्रेष्ठ कृति मेघदूत का रचना किया था, जिसका छ.ग. भाषा में रूपांतरण मूकुटधर पाण्डेय द्वारा किया गया। तथा सरगुजा को स्वर्ग का प्रवेश द्वार कहा।

रामगढ़ की पहाड़ी में स्थित गुफाएं निम्नांकित हैं



1. सीतादेवगढ़ की गुफा (सरगुजा)

- विश्व की प्राचीनतम नाट्यशाला के साक्ष्य
[CG VYAPAM (SK) 2009]
- 200 ई. पू. में भरतमुनी ने अपनी नाट्यशाला की रचना किया।

2. लक्ष्मणवेंगरा की गुफा (सरगुजा)

3. जोगीमार गुफा (सरगुजा)

- मौर्यकालीन अभिलेख है।
- इसमें नृतक देवदत्त एवं नृत्यिका सुतनिका के प्रेमगाथा का वर्णन है।
[CG PSC (MAINS) 2011]
- इस अभिलेख की भाषा पाली एवं लिपि ब्राम्ही है।
- इस गुफा में चित्रित आकृति मूर्तिकला का उदाहरण है।
- यह गुफा अंजना मौर्य काल के समकालीन है।

[CG Vyapam (Shikshakarmi) 2009]

- जोगीमारा गुफा सरगुजा जिले में स्थित है।

[CG PSC (ARO, APO) 2014]

(B) रायगढ़ — सिंघनपुर गुफा, कबरा की गुफा, बोतल्दा की गुफा इसके अतिरिक्त बसनाझर, टीपाखोल, ओंगना, वेनीपाठ आदि हैं।

(C) कैलाश गुफा — जशपुर, बस्तर, एवं सरगुजा में स्थित हैं।

[CG VYAPAM (E.CHEMIST) 2015]

(D) चितवाडोंगरी — राजनांदगांव

[CG PSC (Pre.) 2016]

(E) कुटुमसर की गुफा — बस्तर (कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान के अन्तर्गत)

[CG PSC (Pre.) 2016]

- खोजकर्ता — डॉ. शंकर तिवारी

[CG PSC (PRE.) 2016]

- इसमें चूने (CaCO_3) के दाने दो प्रकार के संरचना हैं। जिसमें छत पर लटके चूना पत्थर को स्टेलेक्टाईट तथा धरातल पर स्थित संरचना को स्टेलेग्माईट कहते हैं।

[CG VYAPAM (ADEO) 2012]

- यह जल द्वारा निर्मित गुफा है।

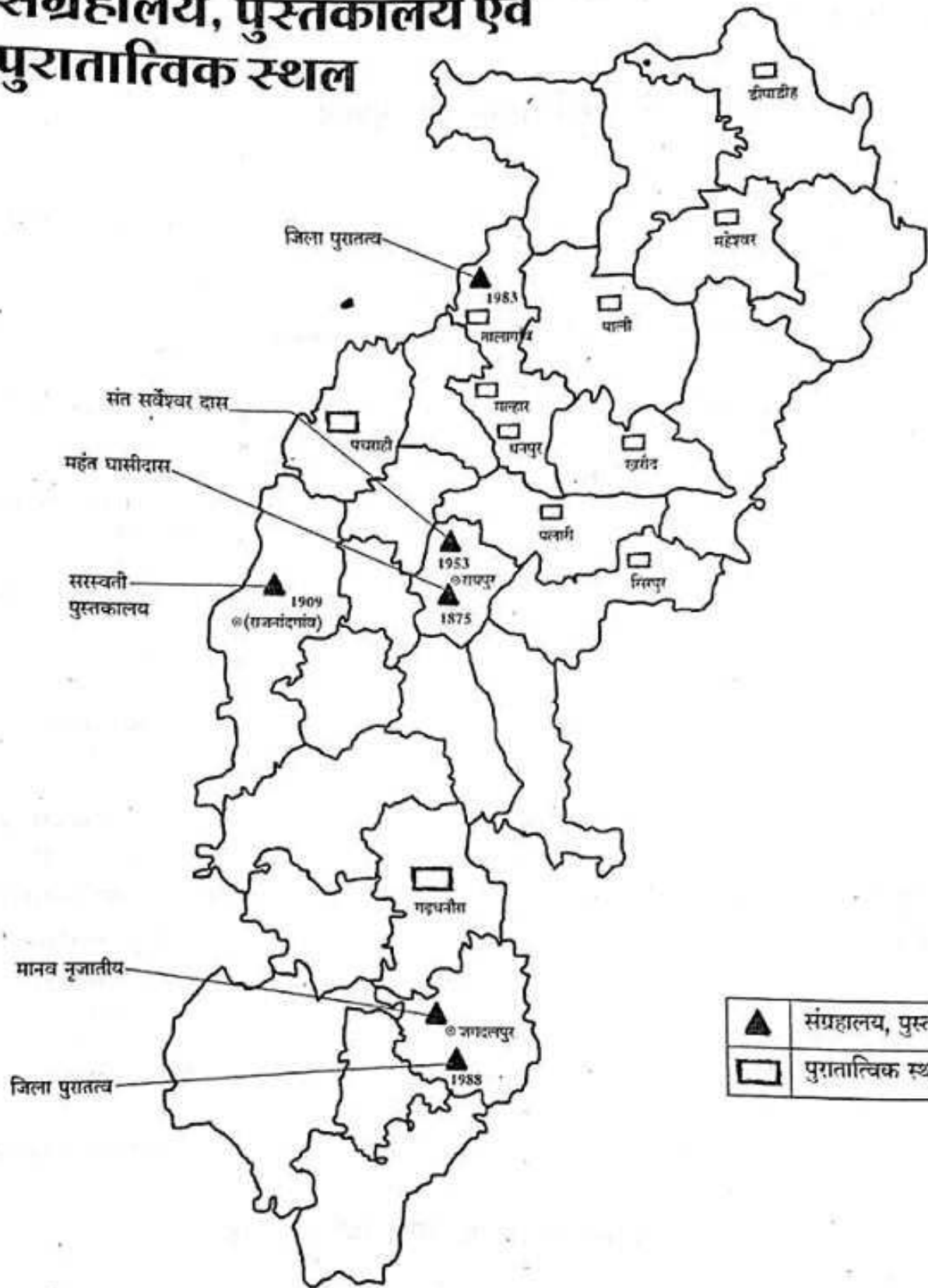
(F) नडापल्ली गुफा — (Nadapalli Caves) बीजापुर जिला में स्थित है।

[CG PSC (ACF) 2016]

4. छत्तीसगढ़ में लघु चिड़िया घर

- कानन पेण्डारी — बिलासपुर
- नंदनवन — रायपुर
- मैत्रीबाग — भिलाई (भारत एवं रूस के मित्रता के प्रतीक)

संग्रहालय, पुस्तकालय एवं पुरातात्विक स्थल



5. छत्तीसगढ़ में संग्रहालय/पुस्तकालय

[CG PSC (LIB.)2014]

- महंत घासीदास संग्रहालय - रायपुर (1875 में)
- नृजाती म्यूजियम (Anthropologium) - जगदलपुर (बस्तर में)
- जिला पुरातात्विक संग्रहालय - बिलासपुर (1983 में)
- जिला पुरातात्विक संग्रहालय - जगदलपुर (1988 में)
- महंत सर्वेश्वरदास सार्वजनिक ग्रंथालय - रायपुर (1953 में)
- सरस्वती पुस्तकालय - राजनांदगांव (1909 में)

नोट:- Anthropological Survey of India द्वारा जगदलपुर में नृजातीय म्यूजियम संचालित किया गया है।

6. छ.ग. में आश्रम

- गहिरा गुरु आश्रम - जशपुर
- वाल्मिकी आश्रम - बारनवापारा (महासमुंद)
- तुरतुरिया आश्रम - बारनवापारा (महारासमुंद)
- विवेकवर्धन आश्रम - महासमुंद (यतियतनलाल द्वारा)
- शंभरी आश्रम - शिवरीनारायण (जांजगीर-चांपा)
- सप्तऋषि आश्रम - सिहावा पर्वत (धमतरी)
- श्रृंगी आश्रम - सिहावा पर्वत (धमतरी)
- विवेकानंद आश्रम - नारायणपुर (1989 में आत्मानंद द्वारा)
- सत्याग्रह आश्रम - रायपुर (पं. सुन्दरलाल शर्मा द्वारा)
- स्वामी विवेकानंद सेवाश्रम - रायपुर

[CG VYAPAM (TC)2010]

7. छ.ग. के पुरातात्विक स्थल

- डीपाडीह - बलरामपुर
- महेशपुर - सरगुजा
- पाली - कोरबा
- खरीद - जांजगीर -चांपा
- मल्हार, ताला गांव, धनपुर - बिलासपुर
- पचराही - कवर्धा
- पलारी - बलौदाबाजार
- सिरपुर - महासमुंद
- गढधनोरा - कोण्डागांव (प्राचीन विष्णु मंदिर)

[CG PSC (ASST.GEOLOGIST)2011]

8. जिलावार विवरण

(A) बिलासपुर

○ रतनपुर

- रतनपुर को तालाबों का नगरी (Tank of City) कहा जाता है।
- कालचुरी वंश के शासक रत्नदेव प्रथम ने 1050 ई. (11वीं शताब्दी) में नगर बसाया था। अतः इसका नाम रतनपुर पड़ा। तथा इस काल में इसको कुबेरपुर के नाम से भी जाना जाता था।

[CG PSC (RDA)-2014]

रतनपुर के अन्य स्थल

[CG PSC (RDA)-2014]

1. महाभाया मंदिर (रतनपुर)

- स्थापना - 1050 ई. (11वीं शताब्दी)
- निर्माणकर्ता - रत्नदेव प्रथम

2. रामटेकरी मंदिर (रतनपुर)

- निर्माण 18 शताब्दी
- निर्माणकर्ता - बिम्बाजी भोसले

3. सती चौरा

- निर्माण - 18 शताब्दी
- छ.ग. के प्रथम सती उमाबाई के सती होने के प्रति।
- उमाबाई बिम्बाजी भोसले की पत्नी थी।

4. लखनी मंदिर

- निर्माण - 12 शताब्दी

5. भैरवबाबा मंदिर

6. तुलजा भवानी मंदिर

- रतनपुर, बिम्बाजी भोसले

○ अमेरीकापा - तालागांव

- मनियारी नदी के तट पर स्थित ऐतिहासिक व पुरातात्विक स्थल है। [CG Vyapam (FCPR) 2016], [CG Vyapam (LOI) 2015]
- अमेरीकापा - ताला शिवनाथ - मनियारी नदियों के संगम के समीप है। [CG Vyapam (FCPR) 2016], [CG PSC (Pre) 2015]

1. रुद्र शिव की अष्टमुखी प्रतिमा (तालागांव)

- यह प्रतिमा 11 जीवों के विभिन्न प्राणियों के अंगों से निर्मित लाल बलुआ पत्थर से बनी है। [CG Vyapam (FCPR) 2016], [CG PSC (ACF) 2016]
- निर्माणकर्ता - शरमपुरी शासक [CG Vyapam (FI) 2006]

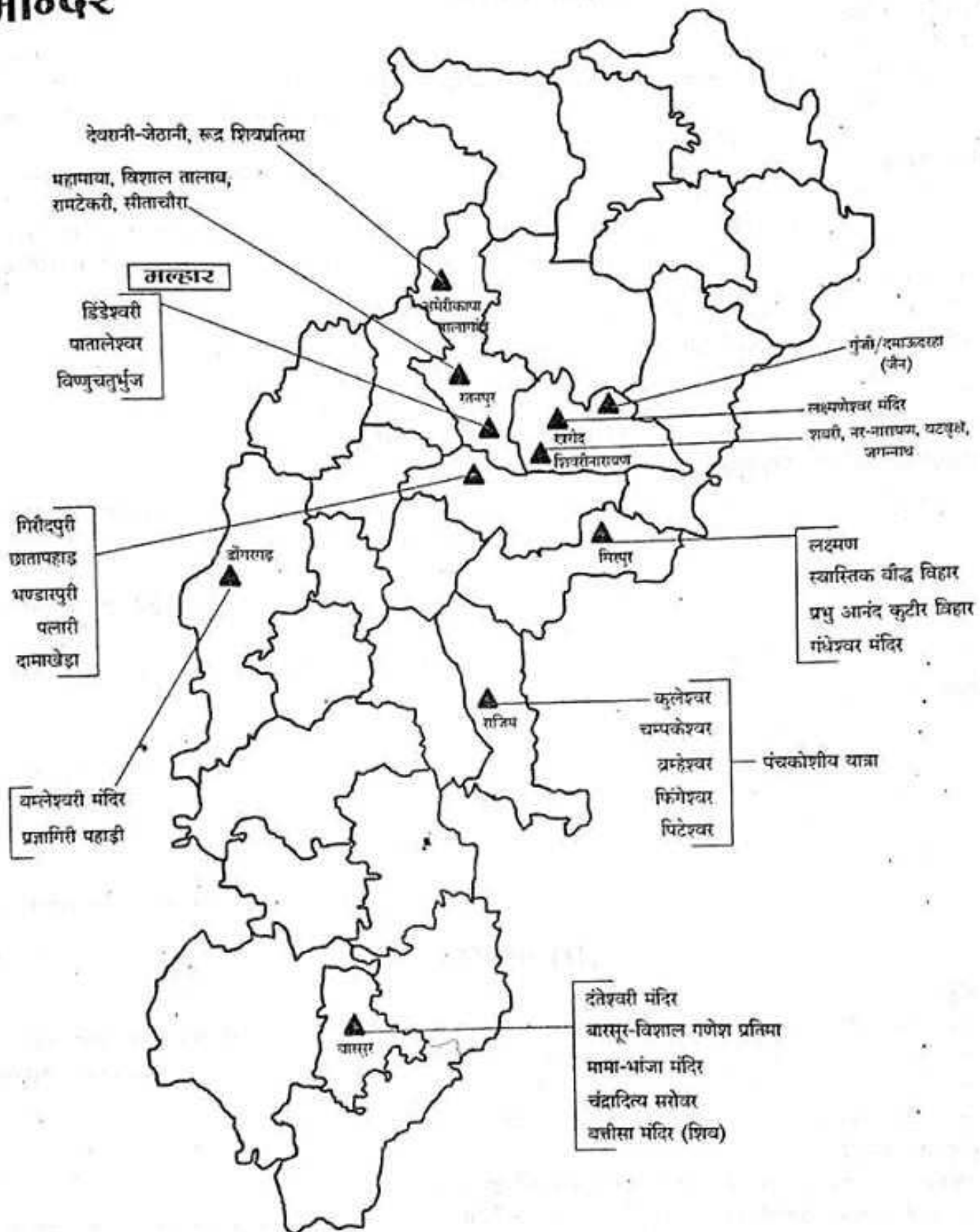
2. देवरानी जेठानी मंदिर [Deorani Jethani Temple] (तालागांव)

- छ.ग. का सबसे प्राचीन मंदिर है। [CG PSC (MI) 2014]
- निर्माण - 5 वीं से 8 वीं शताब्दी में तालागांव में स्थित है। [CG PSC (AP) 2016], [CG Vyapam (AVFO) 2012]
- इसका निर्माण लाल बलुआ पत्थर से किया गया है।
- यह मुक्त कालीन स्थापत्य कला का प्रतिनिधित्व करता है।
- अमेरी कापा तालागांव शिवनाथ और मनियारी नदी के तट पर स्थित है। [CG PSC (Pre) 2015]

3. मल्हार (बिलासपुर)

- शरमपुरी राजा प्रसन्ननाथ द्वारा लीलागर (निहिला) के तट पर स्थित है।
- यह डिंडेरवी मंदिर, पत्तालेश्वर मंदिर (Partheshwar Mahadev Temple) यतुर्भुजी विष्णु के प्रतिमा है। [CG PSC (Librarian) 2014]
- विष्णु के यतुर्भुजी मूर्ति सर्व प्राचीन मूर्ति है जो कि मौर्यकालीन माना जाता है। [CG PSC (Librarian) 2014], [CG Vyapam (Asst. Man) 2015]

मन्दिर



(B) कबीरधाम

1. भोरमदेव मंदिर

- निर्माण - 1089 ई. में फणिनागवंशीय शासक गोपाल देव द्वारा कबीर धाम जिले के ग्राम छपरी के निकट चौरागांव नामक स्थान पर।
- यह मध्यप्रदेश के खजुराहो के समान होने के कारण छ.ग. के खजुराहो की संज्ञा दिया जाता है। जो कि नागर स्थापत्य कला की चंदेल शैली में निर्मित है।
- यहाँ प्रतिवर्ष भोरमदेव उत्सव मनाया जाता है।

[CG Vyapam (ABEO)2012],[CG PSC (MI) 2014]

[CG Vyapam (Mahila Supervisor) 2009]

[CG PSC (ARO, APO) 2014]

[CG PSC (RDA) 2014]

2. मड़वा महल

- निर्माण - 1349 ई. में फणिनागवंशी शासक रामचन्द्रदेव द्वारा
- मड़वा महल को दूल्हा देव भी कहा जाता है।

नोट:- कवर्धा महल के मुख्य प्रवेश द्वार को हाथी दरवाजा के रूप में भी माना जाता है।

3. छेरकी महल

- मड़वा महल के पास छेरका महल है, यह एक शिव मंदिर है।
- इस महल के आस-पास बकरी की गंध आती है, इसलिए इसका नाम छेरकी महल रखा गया है।

(C) जांजगीर-चाम्पा

1. लक्ष्मणेश्वर मंदिर (खरौद)

- यह भगवान शिव का मंदिर है।
- इसका निर्माण सोमवंशीय शासकों के द्वारा किया गया जबकि जीर्णोद्धार कल्चुरी शासक रत्नदेव तृतीय द्वारा किया गया।
- इसे छ.ग. का काशी कहा जाता है। जिसका प्राचीन नाम इंद्रपुर के नाम से भी जाना जाता है।
- खरौद के लक्ष्मणेश्वर मंदिर के गर्भगृह में शिवलिंग की स्थापना की गई है।

[CG PSC (enng-1)2015]

[CG PSC (ENGG-G-1)2015]

2. गुंजी (ऋषभतीर्थ)

- इसे दमउदरहा नाम से भी जाना जाता है। जिसमें प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव के मूर्ति है।

[CG PSC (HORTI) 2015]

3. शिवरीनारायण

- यह महानदी, शिवनाथ व जोक नदी के संगम में स्थित है। यहां नर नारायण, चंद्रचूण एवं जगन्नाथ मंदिर है।
- प्रसिद्ध शिवरीनारायण मंदिर जांजगीर-चाम्पा में स्थित है।
- प्रसिद्ध चंद्रचूण मंदिर का निर्माण कवि कुमार पाल ने कराया था

[CG Vyapam (SK)2009]

4. अड़भार (अष्टद्वार)

- यहां एक अष्टभुजीय मंदिर है।

नोट:- प्रसिद्ध पीथमपुर शिवमंदिर हसदेव नदी पर स्थित है। [CG PSC (ABCO) 2014],[CG VYAPAM (SAHAYAK SAM PARL)2013]

(D) महासमुंद

1. सिरपुर

- यह धार्मिक, ऐतिहासिक पुरातात्विक स्थल है, जिसे प्राचीन काल में श्रीपुर एवं चित्रांगदपुर के नाम से भी जाना जाता है। जिसे शरभपुरीय वंशीय एवं पाण्डुवंशीय शासकों की राजधानी का श्रेय है।
- बौद्ध ग्रंथ अवदान शतक के अनुसार महात्मा बुद्ध यहाँ आये थे।
- चीनी यात्री ह्वेन सांग ने 639 ई. में सिरपुर की यात्रा की।

[CG VYAPAM (FI) 2007]

(A). लक्ष्मण मंदिर

- निर्माण - 7 वीं सदी, इस मंदिर का प्रशस्ति रचना कवी ईशान देव ने की थी।
- पाण्डुवंशीय शासक महाशिवगुप्त बालार्जुन के काल में उनकी माता रानी वासुदेवी ने अपने पति हर्ष गुप्त की स्मृति में बनवाया था।

[CG PSC (CMO, Paper-2)2010]

- यह मंदिर पूर्णतः लाल ईंटों से बना है, जिसमें देवी देवताओं, पुष्प एवं पशुओं का कलात्मक चित्रांकन किया गया है।
- इसके गर्भगृह में भगवान विष्णु का प्रतिमा है।

(B) स्वास्तिक बौद्ध विहार

- स्वास्तिक विहार बौद्ध धर्म से संबंधित है। [CG Vyapam (RI)2015]
- अवदान शतक के अनुसार गौतम बुद्ध यहां आए थे।
- यात्रियों का राजकुमार के नाम से प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सिरपुर की यात्रा (635-640) की थी। जो कि 639 ई. को सिरपुर आये थे।
- यहाँ प्रतिवर्ष बुद्ध पूर्णिमा में सिरपुर महोत्सव का आयोजन एवं माघ पूर्णिमा में मेला लगता है।

2. आनंद प्रभु कुटीर बिहार -

- पाण्डुवंशीय शासक महाशिवगुप्त बालार्जुन के काल में 650 ई. में बौद्ध भिक्षु आनंद प्रभु के द्वारा [CG VYAPAM(TC)2010]

नोट:- तुरतुरिया वाल्मिकी ऋषि से संबंध है। लव कुश का जन्म रथल है।

[CG PSC (pre)-2015], [CG PSC (SEE) 2016]

3. गंधेश्वर महादेव मंदिर

- स्थापना - 8 वीं शताब्दी
- गंधेश्वर महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार चिमनाजी भोसला ने कराया था।

4. खल्लारी माता मंदिर

- यह मंदिर कल्चुरी शासक ब्रह्मदेव के शासन काल के दौरान 1415 ई. में देवपाल में मोघी द्वारा निर्मित। [CG VYAPAM(TC)2010]

(E) गरियाबंद

राजिम

- प्रतिवर्ष माघपूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक यहां मेला का आयोजन होता है।
- राजिम को कमल क्षेत्र व पंचकोशी भी कहा जाता है। क्योंकि यह कमल के पांच कोस (पंखुड़ी) की भांति यहां के पांच मंदिर (कुलेश्वर, चम्पेश्वर, ब्रह्मणेश्वर, किंगेश्वर, पटेश्वर) स्थित है।
- राजिम को छ.ग. का प्रयाग कहा जाता है। [CG PSC (LIB.) 2015]

चम्पारण्य

- प्रसिद्ध वैष्णव संत वल्लभाचार्य की जन्मस्थली है। [CG Vyapam (Hostal Warden)2016]
- यहां का चम्पकेश्वर महादेव का मंदिर दर्शनीय है।

राजिम के दर्शनीय स्थल

1. राजीव लोचन मंदिर (राजिम)

- निर्माण - 7वीं शताब्दी
- निर्माणकर्ता - विलासतुंग (नलवंशी शासक)
- जीर्णोद्धार - जगतपाल (कल्चुरी शासक पृथ्वीदेव द्वितीय के सेनापति)
- यह द्रविड़ स्थापत्य कला की पंचायतन शैली से निर्मित वैष्णव धर्म से संबंधित है।

2. कुलेश्वर महादेव मंदिर (राजिम)

- महानदी, पैरी, सोंदूर के संगम पर निर्मित।
- यहां प्रतिवर्ष माघपूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक मेला लगता है। जिसे छ.ग. शासन ने पांचवे कुंभ का दर्जा दिया है।

(F) बलौदा बाजार

1. गिरौदपुरी

- संत गुरु घासीदास की जन्म स्थली जो प्रदेश के सतनामी समाज का प्रमुख तीर्थ स्थल है।
- गिरौदपुरी में स्थित जैतखाम की ऊँचाई (77 मीटर) है। जिसकी तुलना कुतुबमीनार से की जाती है। [CG Vyapam (Patwar)-2016]
- इस संरचना का डिजाइन आई.आई.टी. रुड़की की विशेषज्ञों के द्वारा बनाया गया है।

2. दामाखेड़ा

- यह कबीर पंथियों का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। [CG PSC (Pre) 2015]
- प्रदेश में सर्वप्रथम कबीर पंथियों के 12 वें वंशगुरु उग्रनाम साहब के द्वारा यहां पर कबीर मठ की स्थापना वर्ष 1903 में की गई। [CG PSC (ADPHS) 2013]

नोट:- शिवनाथ तथा खारून नदियों का संगम सोमनाथ पर है।

(G) रायपुर

1. चन्द्रखुरी

- भगवान राम की माता कौशल्या का मंदिर स्थित है।
- रामायण काल के वैद्य सुषेण का यह निवास क्षेत्र था।

2. आरंग

- छ.ग. की मंदिरों की नगरी के नाम से प्रसिद्ध है। [CG PSC (MI) 2015]
- यहां भांडलदेव मंदिर (जैन तीर्थंकर, अजीतनाथ, श्रेयांश की मूर्तियां स्थित हैं) एवं बाघलदेव व हरदेवलाल आदि प्रसिद्ध धार्मिक स्थल हैं। [CG PSC (ENGG G-2)-2015]

नोट:- हटकेश्वर मंदिर रायपुर में स्थित है।

(H) सरगुजा

1. मैनपाट

- यहां से मांड नदी का उद्गम हुआ है।
- यहां पर भू-कंपन क्षेत्र जलजली स्थित है।
- यह तिब्बती शरणार्थियों की 1962 में बसाया गया। [CG PSC (Pre.) 2016]
- प्रदेश का एकमात्र हिल स्टेशन जिसे छ.ग. का शिमला कहा जाता है। [CG PSC (MI) 2014]
- यह दर्शनीय स्थलों में जलप्रपात (Tiger Point & Eco point) स्थित है। [CG Vyapam (HW) 2016]

नोट:- प्रसिद्ध पर्यटन स्थल तकिया अम्बिकापुर में है। [CG Vyapam (SK) 2009]

(I) दंतेवाड़ा

1. बारसूर

- यह छिंदकनागवंशियों की प्रारंभिक राजधानी थी।
- 11वी. शताब्दी में यह क्षेत्र चक्रकोट या भ्रमरकूट के नाम से प्रसिद्ध था।
- बारसूर के दर्शनीय स्थलों में मामा-भांजा मंदिर, बत्तीसा मंदिर व चंद्रादित्य मंदिर महत्वपूर्ण है।
- चंद्रादित्य मंदिर के प्रांगण से गणेश जी की विशाल मूर्ति प्राप्त हुई है।
- मामा-भांजा मंदिर बारसूर में स्थित है।
- प्राचीन चंद्रादित्य समुद्र नामक सरोवर बारसूर में स्थित है।

* [CG PSC (Librarian)-2014] [CG PSC (Pre)-2005]

[CG PSC (ENGG G-2)-2015]

2. दंतेश्वरी मंदिर

- निर्माण - 14वीं सदी
- निर्माणकर्ता - अन्नमदेव (काकतीय वंशी शासक)
- यह मंदिर डंकिनी-शंखिनी नदी के संगम पर निर्मित है।
- ब्रिटिश काल में इस मंदिर में नरबलि प्रथा के लिए माड़िया जनजाति के संस्कृति में हस्तक्षेप हेतु अंग्रेजों के खिलाफ मेरिया विद्रोह (1842-1863) हुआ था।

[CG PSC (Librarian)-2014]

[CG PSC (SK)-2005]

(J) राजनांदगांव

1. डोंगरगढ़

- प्राचीन नाम - कामावतीपुर (यह नाम राजा कामसेन के नाम पर रखा गया है।)
- डोंगरगढ़ में चैत्र नवरात्री में प्रतिवर्ष मेला लगता है।

डोंगरगढ़ के दर्शनीय स्थल

1. बम्लेश्वरी मंदिर

- निर्माण - राजा वीरसेन
- पूर्वकाल में यह मंदिर महेश्वरी देवी (माता पार्वती) के नाम से चर्चित था।

[CG PSC (Civil judge)-2014]

2. प्रज्ञागिरी पहाड़

- यहां पर 30 फीट ऊँची गौतम बुद्ध की प्रतिमा दर्शनीय है।

(K) कोरबा

1. पाली

- यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व धार्मिक पर्यटन स्थल है। प्रमुख दर्शनीय स्थल इस प्रकार से है।

1. शिव मंदिर

- निर्माण - 9 वीं सदी
- निर्माणकर्ता - राजा विक्रमादित्य (बाणवंशी शासक)
- जीर्णोद्धार - जाजल्यदेव प्रथम (कलचुरी शासक)

2. लाफागढ़

- इसे छ.ग. का धितौड़ कहा जाता है।
- यह पर्यटन स्थल पाली से 15 किमी. दूर स्थित है।
- इसके दुर्गम पहाड़ की चोटी पर चैतुरगढ़ स्थित है।

3. चैतुरगढ़

- इसकी चोटी पर एक किला स्थित है। जिसे चैतुरगढ़ का किला कहा जाता है।
- इस किले का निर्माण राजा बाहरेन्द्र साय द्वारा 14 वीं शताब्दी में करवाया गया था।
- ब्रिटिश अधिकारी बैंगलर ने इसे दुर्गम व अग्रेष्ठ किला कहा है।
- इसकी प्राकृतिक सुन्दरता के कारण इसे छ.ग. का कश्मीर भी कहा जाता है।
- चैतुरगढ़ किले को लाफागढ़ के नाम से भी जाना जाता है।

[CG PSC (ADIHS)-2008]

[CG PSC (LIB)-2014]

4. गुफा शिवलिंग

- मान्यता है कि यहां भगवान शिव ने भष्मासुर का वध किया था।
- डीपाडीह (वलरामपुर)
- मान्यता है कि यहां भगवान राम का महल था।